अजाइब कुदिरत, करता रची कल सां,
आदि-सकति खों देव टे, तनि खों थिया पंज तत,
ततनि खों विस्तारु थियो, सभ न्यारी नानत,
सैलु करे सभकंहिं जो, सामी बिना ममत,
लुड़ खे हणी लत, मोटी सुम्हियो सेज ते.

सृष्टि की रचना बड़ी ही विचित्र है। यह सृष्टि परब्रह्म ने अपनी व्यवहार कुशलता, कल्पना द्वारा प्रेमपूर्वक रची है। प्रारंभ में आदि शक्ति से तीन देवों (ब्रह्म, विष्णु, महेश) का निर्माण हुआ। उनमें से पाँच तत्त्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) का निर्माण हुआ। फिर इन पाँच तत्त्वों का विस्तार होकर यह विश्व निर्माण हुआ। इस विस्तार के कारण ही हमें भिन्न-भिन्न वस्तुएँ दिखाई पड़ती हैं तथा द्वैत का आभास होता है। सृष्टि का निर्माता परब्रह्म अलिप्त होकर सभी वस्तुओं में मुक्त-भाव से (बिना किसी आसक्ति के) विहार करता रहता है। उसी समय सृष्टि के समूचे शोर से विमुख होकर परमेश्वर अपनी शय्या पर सो जाते हैं।

इस श्लोक में महाकवि सामीजी ने सारे विश्व में व्याप्त परब्रह्म का, परमेश्वर का, ईश्वरीय चेतना का वर्णन किया है। इसके साथ ही परमेश्वर के अनुभवातीत/विकल्पातीत (Transcendental) अवस्था का भी दर्शन करवाया है, जो विश्व से भी अति श्रेष्ठ है। परब्रह्म एक ही समय में निर्गुण एवं सगुण रूप धारण करने वाले हैं। ब्रह्म या परमेश्वर के तीन रूपों में से एक हैं ब्रह्मा या ब्रह्मदेव, जो इस सृष्टि के निर्माता हैं। भगवान विष्णु के नाभिकमल में ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई। स्वयं को अकेला पाकर वे एक-एक करके चारों दिशाओं में घूम कर देखने से इनके चार मुख हो गये और चतुर्मुख कहलाने लगे। सृष्टि, स्थिति एवं प्रलय रूपी तीन मूर्तियों में स्थिति करने वाले भगवान विष्णु हैं। नार अथवा जल में स्थित होने के कारण विष्णु का नाम 'नारायण' है। अनेक चतुर्युगों के पश्चात् जब उन में सृष्टि करने की ईक्षणा-वृत्ति हुई, तब उन्होंने नाभि-ब्रह्मा को सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति प्राप्त करने के लिए तप करने को कहा। अनेक वर्षों की तपस्या के पश्चात् ब्रह्मा ने सृष्टि निर्माण की । भगवान विष्णु वैकुंठ में रहते हैं। शेषनाग इनकी शय्या है।

■